P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक की वस्तु स्थिति

सुशीला मेनारिया
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
विद्या भवन गोविंद राम
सेसकारिया टीचिंग कालेज,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में शाधार्थी ने ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र – पाठ्यपुस्तक की वस्तु स्थिति'' को प्रस्तुत किया हैं। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए अध्ययन को उच्च माध्यमिक स्तरीय 11वीं की अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक तक रखा गया। शोधार्थी से निष्कर्षतः पाया कि कक्षा 11वीं का अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के स्तर से ज्यादा कठिन तथा विस्तृत पाया गया। तथा पाठ्यपुस्तक में विद्यमान आंकड़े तथा सवाल समझने में कठिनाई आती हैं।

मुख्य शब्द : उच्च माध्यमिक स्तर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक।

प्रस्तावना

आज संसार में चारों ओर नये–नये आविष्कार व अन्वेषण हो रहे है उनका वास्तविक आधार अर्थ ही है, जिसके अभाव में मानव अपनी किसी भी योजना अथवा संगठन को कार्यान्वित करने में असमर्थ होता है, वैज्ञानिक उन्नति का कारण आर्थिक उन्नति हैं। जिससे आज शिक्षा क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा, आधुनिक समाज में द्रुत परिवर्तन और ज्ञानवृद्धि की गति के कारण शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन आवश्यक है और यह परिवर्तन शिक्षा में शिक्षण के माध्यम से किया जा सकता हैं।

शिक्षा आयोग (1964–66) – के अनुसार ''शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है।''

शिक्षा के औपचारिक रूप की आत्मा पाठ्यक्रम है। यह शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परम आवश्यक हैं, इसको शिक्षा प्रक्रिया की रीढ़ की हड्डी कहा जाता हैं। इसके अभाव में औपचारिक शिक्षण की कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं। इसकी परिभाषा विषय वस्तु, उद्देश्यों अथवा कार्यान्वयन आदि की दृष्टि से पृथक–पृथक दी जा सकती हैं।

क्रो एण्ड क्रो अनुसार – ''पाठ्यक्रम में सीखने वाले बालकों के वे सभी अनुभव निहित है, जिन्हें वे विद्यालय या उसके बाहर प्राप्त करते हैं।''

NCERT अनुसार – ''पाठ्यक्रम विद्यालय द्वारा बच्चों को प्रदान किये जाने वाले जानबूझ कर नियोजित किये गय सीखने के अनुभवों का योग है।''

समस्या कथन

राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक की वस्तु स्थिति।

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता का विद्यार्थियों के सन्दर्भ में पता लगाना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता का अध्यापक के सन्दर्भ में पता लगाना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक की दैनिक जीवन में उपयोगिता का पता लगाना।

साहित्यावलोकन

काला, मालचन्द (2016) – ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की अभिवृत्ति'' एम.एड. लघुशोध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

मीणा, ललित कुमार (2015) – ''सामाजिक अध्ययन के शिक्षण एवं अधिगम के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का प्रत्यक्षण'' लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

फोर्ड, ब्रोकाटो जेने (2015) ने ''Teachers and Administrators Perceptions of Teachers Performance rducation System in two Georgia's Public School Distrect'' विषय पर शोधकार्य किया।

न्यादर्श

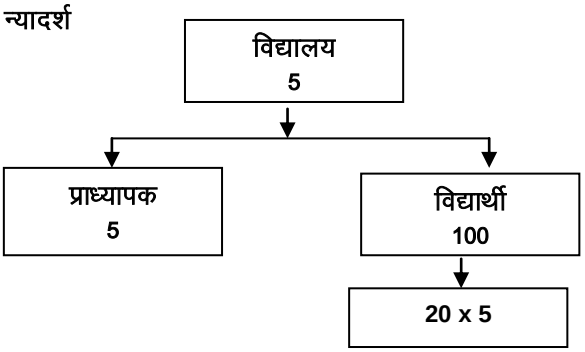

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण अधिगम की स्थिति एवं समस्याएँ हेतु **''सर्वेक्षण विधि''** का प्रयोग किया।

शोध उपकरण

1. विद्यालय में अर्थशास्त्र शिक्षण की स्थिति जानने हेतु विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली।
2. विद्यालय में अर्थशास्त्र शिक्षण की स्थिति जानने हेतु शिक्षकों के लिए प्रश्नावली।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

उपकरण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता के द्वारा ''प्रतिशत प्रविधि'' की सहायता से दत्त विश्लेषण।

समग्र विश्लेषण

प्राध्यापकों के मत के अनुसार

सारणी संख्या – 1.1

अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु सम्बन्धी स्थिति

क्र. सं.	कथन/प्रश्न	उत्तर आवृत्ति प्रतिशत	
		हाँ	नहीं
1.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के स्तरानुकूल है?	100	–
2.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की क्रमबद्धता है?	80	20
3.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु से सम्बन्धित रेखाचित्र है?	80	20
4.	ग्राफ तथा रेखाचित्र से सम्बन्धित व्याख्या का स्पष्टीकरण दिया गया है?	60	40
5.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक में दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों का समावेश है?	60	40
6.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक है?	100	–

आरेख संख्या – 1.1

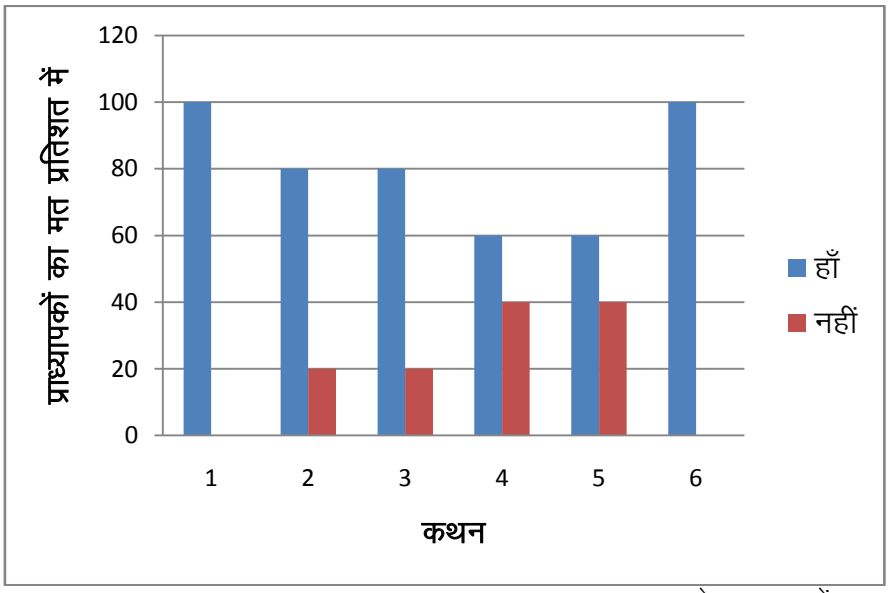

विश्लेषण

सारणी संख्या 4.1 के अनुसार अर्थशास्त्र के पाठ्यवस्तु का विश्लेषण इस प्रकार है –

1. कथन 1 के प्रत्युत्तर में 100 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि विद्यालय में कक्षा 11 की अर्थशास्त्र विषय की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के स्तर के अनुकूल है।
2. कथन 2 के प्रत्युत्तर में 80 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की क्रमबद्धता है और 20 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि विषयवस्तु को क्रमबद्धता नहीं है।
3. कथन 3 के प्रत्युत्तर में 80 प्रतिशत प्राध्यापकों मत है कि पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु से सम्बन्धित आवश्यक

रेखाचित्र है तथा 20 प्रतिशत प्राध्यापकों का कहना है कि विषयवस्तु से सम्बन्धित आवश्यक रेखाचित्र नहीं है।

4. कथन 4 के प्रत्युत्तर में 60 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि पाठ्यपुस्तक में ग्राफ तथा रेखाचित्र से सम्बन्धित रेखाचित्र का स्पष्टीकरण दिया गया है तथा 40 प्रतिशत प्राध्यापकों के मतानुसार स्पष्टीकरण दिया हुआ नहीं हैं।
5. कथन 5 के प्रत्युत्तर में 60 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक में दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों का समावेश किया गया है तथा 40 प्रतिशत प्राध्यापकों के मतानुसार पाठ्यपुस्तक दैनिक उदाहरणों का समावेश नहीं किया गया है।
6. कथन 6 प्रत्युत्तर में 100 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करती है।

विद्यार्थियों के मत के अनुसार

सारणी संख्या – 1.2
पाठ्यवस्तु सम्बन्धी स्थिति व समस्या

क्र. सं.	कथन/प्रश्न	उत्तर आवृत्ति प्रतिशत	
		हाँ	नहीं
1.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक समझने में सरल है?	65	35
2.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक में उचित रेखाचित्र दिए गए हैं?	96	4
3.	रेखाचित्र के वर्णन को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं?	41	59
4.	अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक में उचित उदाहरण शामिल हैं?	93	7
5.	अर्थशास्त्र विषय की विषयवस्तु आपको विस्तृत लगती है?	80	20

आरेख संख्या – 1.2

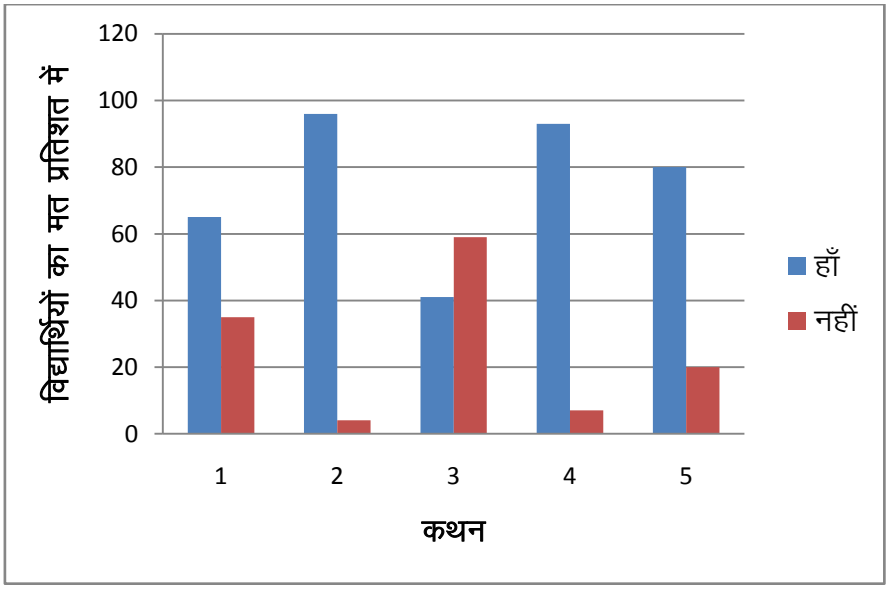

विश्लेषण

सारणी संख्या 4.2 के अनुसार पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु सम्बन्धित स्थिति एवं समस्याओं का विश्लेषण इस प्रकार है –

1. कक्षा 11 की अर्थशास्त्र विषय की पाठ्यपुस्तक 65 प्रतिशत विद्यार्थियों को सरल लगती है तथा 35 प्रतिशत विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक कठिन लगती हैं।
2. 96 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तक में उचित रेखाचित्र दिए गए है तथा 4 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि उचित रेखाचित्र नहीं दिए गए हैं।
3. कक्षा 11 के अर्थशास्त्र के 41 प्रतिशत विद्यार्थी रेखाचित्रों को समझने में कठिनाई महसूस करते है और 59 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत है कि उन्हें पाठ्यपुस्तक में दिए गए रेखाचित्रों में कोई कठिनाई नहीं लगती हैं।
4. 93 प्रतिशत अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मानना है कि पाठ्यपुस्तक में उचित उदाहरण शामिल है तथा केवल 7 प्रतिशत विद्यार्थियों से यह जानकारी प्राप्त हुई कि पाठ्यपुस्तक में उदाहरण नहीं दिये गये हैं। कक्षा 11 के अर्थशास्त्र के 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को विषयवस्तु विस्तृत लगती है तथा 20 प्रतिशत विद्यार्थी के अनुसार पाठ्यवस्तु विस्तृत नहीं हैं।

निष्कर्ष

प्राध्यापकों के मत के अनुसार

सारणी संख्या 1.1 के विश्लेषण से निम्नांकित तथ्य उभरकर सामने आये है वह इस प्रकार है –

1. शत प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के स्तरानुकूल है तथा अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हैं। अधिकांश प्राध्यापकों का मत है कि पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की क्रमबद्धता, आवश्यकता रेखाचित्र तथा रेखाचित्र से सम्बन्धित स्पष्टीकरण दिया गया हैं।
2. दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों के अन्तर्गत पाँचों प्राध्यापकों ने अपने विचार व्यक्त किये जिसके अन्तर्गत 80 प्रतिशत प्राध्यापकों का कहना है कि पाठ्यपुस्तक में बैंक, जनगणना से सम्बन्धित आंकड़ों का समावेश है तथा 20 प्रतिशत प्राध्यापक के अनुसार विमुद्रीकरण उपभोग, उत्पादन तथा बहुलक माध्य से सम्बन्धित दैनिक उदाहरणों का समावेश पाठ्यपुस्तक में किया गया है।

अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक अर्थशास्त्र शिक्षण के कौन से उद्देश्यों की पूर्ति करता है? इसके अन्तर्गत 60 प्रतिशत प्राध्यापकों का मत है कि आर्थिक मुद्दों तथा अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित बातों की जानकारी देती हैं। 40 प्रतिशत प्राध्यापकों के मतानुसार पाठ्यपुस्तक बाजार की जानकारी तथा विभिन्न अवधारणाओं – बेरोजगारी, गरीबी से सम्बन्धित उद्देश्यों को पूरा करती हैं।

विद्यार्थियों के मत के अनुसार

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों का मानना है कि अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक में उचित रेखाचित्र तथा उदाहरण शामिल किए गए हैं। 65 प्रतिशत विद्यार्थी ही पाठ्यपुस्तक को सरल मानते है। 41 प्रतिशत विद्यार्थियों को रेखाचित्र के वर्णन को समझने में कठिनाई महसूस करते है। जबकि अधिकतर विद्यार्थियों को रेखाचित्र स्पष्टीकरण सरल लगता है। अर्थशास्त्र विषय की पाठ्यपुस्तक 80 प्रतिशत विद्यार्थी को विस्तृत लगती हैं।

विद्यार्थियों के मत अनुसार अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक में कौनसी कठिनाई महसूस करते है जिसके अन्तर्गत 90 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि पाठ्यपुस्तक में प्रकरण से सम्बन्धित आंकड़े अधिक है जिन्हें याद करने में बहुत परेशानी होती है। 20 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत है कि सवाल समझने में कठिनाई आती है तथा स्तर से ज्यादा कठिन है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

1. *अरोड़ा, रीता और मारवाह, सुदेश (2005) : ''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।*
2. *चौबे, आर.के. (2004) : ''शिक्षा तकनीकी'', आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर।*
3. *ढौडियाल एवं फाटक (2003) : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
4. *रायजादा, बी.एस. (1997) : ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
5. *शर्मा, जी.एस. (1990) : ''अर्थशास्त्र शिक्षण'', लायल बुक डिपो, मेरठ।*

शोध प्रबन्ध

6. *मेनारिया, सुशीला (2019) : ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण–अधिगम की स्थिति एवं समस्याएँ'', लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।*

Journals

7. *E.P.C. (1984): "Geography Teaching in Secondary School: Results of a questionaire", Education Publisheres Council, Geographical Journal, Vol. 69, Page 136.*